Date

घनानन्द (व्याख्या)

निम्नलिखित छंद की सप्रसंग व्याख्या करें।

1. "हीन भएँ जल मीन अधीन कहा कछु मो अकुलानि समानै।
नीर सनेही कों लाय कलंक निरास ह्वै कायर त्यागत प्रानै।
प्रीति की रीति सु क्यों समझै जड़ मीन के पानि परे कों प्रमानै॥
या मन की जु दसा घनआनंद जीव की जीवनि जान ही जानै॥"

पद सं० - (8)

प्रसंग :- प्रस्तुत छंद प्रेम के पीर कहे जाने वाले कवि घनानन्द द्वारा रचित है। यह घनानन्द द्वारा रचित 'सुजान हित' से लिया गया है। विरही कवि अपनी तुलना मछली से करता है। विरही कवि को लगता है कि उसकी वेदना मछली की वेदना से बढ़कर है। उसकी वेदना दोहरी है एक अपनी प्रेमिका सुजान से बिछुड़ने की दूसरे सुजान द्वारा की गयी उपेक्षा, जो जानते हुए भी अनजान बनी हुई है।

व्याख्या :- विरही कवि घनानन्द कहते हैं कि जल में रहनेवाली मछली जल से अलग होने पर दुःखी हो जाती है अर्थात् मछली को पानी से प्यार होता है। जब तक मछली पानी में रहती है, खुश रहती है ज्यों ही उसे पानी से अलग किया जाता है वह पानी को पाने के लिए तड़पने लगती है। जल में रहकर जीवित रहती है जल से अलग होने पर प्राण छोड़ देती है किन्तु मछली की व्याकुलता तथा मेरी व्याकुलता में समानता नहीं है। अर्थात् कवि की विरह व्याकुलता मछली की विरह व्याकुलता से कहीं अधिक है क्योंकि कवि तथा सुजान दोनों चेतन हैं, जबकि मछली चेतन तथा पानी जड़ है। कायर मछली प्रेम में निराश होकर प्रेमी पानी को कलंकित करके मर जाती है। जल(पानी) जड़ है और मछली चेतन, चेतन मछली की व्याकुलता को जड़ जल नहीं समझ सकता। मछली प्रिय जल के छोड़ अपने जीवन

Date

के आधारित होने को प्रमाणित करती है कि उसने जल से प्यार किया और उससे अलग होने पर प्राण त्याग कर वह प्यार का मूल्य चुका देती है, पर जड़ होने के कारण जल प्रेम वेदना को नहीं समझता। अतः मछली का प्यार एकतरफा है। घनानन्द कहते हैं कि कवि स्वयं तथा उसकी प्रिय सुजान दोनों चेतन हैं दोनों एक दूसरे की व्याकुलता को समझ सकते हैं। इसलिए कवि की व्याकुलता की समानता मछली की व्याकुलता से नहीं की जा सकती है। कवि के मन की दशा उसके प्राणों की प्रियतम सुजान अच्छी प्रकार जानती है।

भाव यह है कि विरही कवि की व्याकुलता मछली की व्याकुलता से अधिक है। क्योंकि कवि तथा उनकी प्रियतम दोनों चेतन हैं जबकि मछली चेतन तथा जल जड़ है। सुजान उसकी पीड़ा की उपेक्षा कर रही है, जानकर भी अनजान बनी हुई है। इस कारण कवि दोहरी वेदना झेल रहा है।

विशेष — 1. यहाँ विरही कवि अपनी तुलना मछली से करता है परन्तु उसकी वेदना मछली की तुलना में कहीं अधिक है। वक्रोक्ति के माध्यम से सुजान के व्यवहार को कठोर सिद्ध किया है। यहाँ व्यतिरेक अलंकार का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

2. इसमें अनुप्रास श्लेष तथा वक्रोक्ति अलंकार है।

3. प्रीति की रीति, जीव की जीवनि, पानी परे को प्रमानै, जान ही जाने आदि प्रयोगों में मुहावरे का सौंदर्य है।

4. रीतिमुक्त काव्य की विशेषता को दर्शाया गया है, कि सच्चे प्रेम में निराशा के लिए कोई स्थान नहीं। वास्तविक प्रेम जिसके प्रति हो जाएगा, उसके अनुकूल या प्रतिकूल होने पर भी बना रहेगा।